धनु राशि

धनु राशि में उत्पन्न जातक का मस्तक ऊँचा, कान बड़े-बड़े, सिर के मध्य अल्प बाल, उदार हृदय, परोपकारी, दूसरों के मनोभावनाओं को जान लेने की विशेष क्षमता होती है। द्विस्वभाव राशि होने के कारण कोई भी निर्णय नहीं ले पाते हैं। इनको जल्दी क्रोध नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक रहता है। इन जातकों में आगे बढ़ने की भावना बलवती रहती है। ऐसे जातक प्रायः रंगीन एवं उत्साही होते हैं। इनकी उदारता का लोग प्रायः अनुचित लाभ उठाने का प्रयास करते हैं।

वर्ष के आरम्भ में इस राशि का स्वामी गुरु तृतीय भाव कुम्भ राशि में संचरण करेंगे, जिससे धन लाभ एवं निकट भाई-बन्धुओं के सहयोग से लम्बे समय से बिगड़े कार्य बनेंगे, परन्तु वर्ष भर राहु का संचरण इस राशि पर होने से प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाओं के बाद ही सफलता प्राप्त होगी। २ मई से मीन राशि पर गुरु के आने पर ही धन-सम्पदा व सवारी और घर में शुभ कार्य होंगे, अपने प्रिय से मिलन होगा। १३ अप्रैल से १३ मई तक सूर्य के पंचमस्थ संचरण करने से सोची हुई योजनाओं में सफलता मिलेगी। विदेश यात्रा के भी योग बन सकते हैं। २३ जुलाई से गुरु के वक्री होने कारण स्वास्थ्य में विकार, मानसिक चिन्ताएं बढ़ेंगी। २० जुलाई से ५ सितम्बर तक मंगल की चतुर्थ दृष्टि रहने से क्रोध एवं चिनाएं बढ़ेंगी। १ नवम्बर को गुरु के पुनः वक्री अवस्था में पुनः कुम्भ राशि में जाने से परिस्थितियों में काफी उथल-पुथल होगी। धन लाभ, पदोन्नति, विदेश यात्रा के योग बनेंगे। १८ नवम्बर को गुरु के पुनः मीन राशि में जाने से शुभ फल घटित होंगे। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में खर्च होगा। ३० नवम्बर से इसके मंगल राशि पर आने से विघ्न-बाधाएं फिर बढ़ सकती हैं।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार तीसरे घर का गुरु क्लेश उत्पन्न कराता है, पति-पत्नी में भ्रम की स्थितियाँ पैदा करवाता है, भाइयों से सम्पत्ति, उत्तराधिकार आदि का विभाजन करवा सकता है। चौथे स्थान में गुरु की स्थिति मई के बाद ही स्थिति को अच्छा बनायेगी।

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं है। समय-समय पर वात, पित्त जैसे रोगों से कष्ट हो सकता है। राहु की स्थिति राशि पर रहेगी। इसके अतिरिक्त मंगल अष्टम में जब तक रहेगा, किसी दुर्घटना आदि का भय रह सकता है। स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सावधान रहें। घर-परिवार के लिए यह वर्ष अच्छा है, शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपसी सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य के लिए यह सम्य अच्छा नहीं रहेगा। आय से अधिक व्यय होगा। किसी चल-अचल सम्पत्ति का क्रय कर सकते हैं। यद्यपि धन का संचय नहीं कर पायेंगे। व्यापार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे।

दशम भाव में शनि के प्रभाव से कर्मक्षेत्र या व्यापार में कभी-कभी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्य में विलम्ब हो सकता है, अतः व्यापार के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ेगा, तभी आप सफल हो सकते हैं। सम्बन्धियों, मित्रों का सहयोग मिलेगा, उनसे लाभ होगा। लम्बी दूरी की यात्राओं में कुछ कष्ट हो सकता है।

इस वर्ष के लिए विशेष उपाय-

२०१० ई० में इस राशि वालों के लिए कुछ उपाय निम्न प्रकार से है-

1. जन्मदिन को जन्मदिन की पूजा करवाकर भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
2. ब्राह्मण को भोजन करवाकर धर्मग्रन्थ का दान दें।
3. प्रतिदिन मन्दिर जाने तथा अपने वंशज के वृद्ध पुरुष की सेवा करने से शुभ फल की प्राप्ति होगी।